



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

11/5
5/9/97

सं० 84]
No. 84]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 7, 1997/वैशाख 17, 1919
NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 7, 1997/VAISAKHA 17, 1919

वाणिज्य मंत्रालय
अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 मई, 1997

विषय :— डेनमार्क से हाइड्रो डी सल्फेराइजेशन हाइड्रो डी सल्फेराइजेशन उत्प्रेरक (एच डी एस), जिक ऑक्साइड डी सल्फेराइजेशन उत्प्रेरक (जिक ओ डी एस), उच्च तापक्रम परिवर्तक उत्प्रेरक (एच टी एस), निम्न तापक्रम परिवर्तक उत्प्रेरक (एल टी एस), सैकण्डरी रिफार्मिंग केटालिस्ट (एस आर) मेथेनेशन उत्प्रेरक (मेथ) के आयातों से संबंधित पाटन रोधी जांच-प्रारम्भिक जांच-परिणाम

ए डी डी/डब्ल्यू/39/95-96.—वर्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1995 तथा उसके सीमाशुल्क टैरिफ (पारित वस्तुओं पर प्रतिपाटन शुल्क की पहचान आंकलन एवं वसूली और क्षति का निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए—

क. प्रक्रिया

1. वर्तमान जांच के संबंध में नीचे वर्जित जांच प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है;

क. डेनमार्क में निर्मित अथवा वहां से निर्यात किए गए निम्नलिखित उत्प्रेरकों के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी को (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) उपरोक्त नियमों के अंतर्गत मै. यूनाइटेड कैटालिस्ट्स इंडिया लिमि., (यूसिल) और प्रोजेक्ट एंड डेवलपमेन्ट इंडिया लिमि. (पीडिल) से निवेदन प्राप्त हुआ था;

- (i) हाइड्रो डी सल्फेराइजेशन उत्प्रेरक (एच डी एस);
- (ii) जिक ऑक्साइड डी सल्फेराइजेशन उत्प्रेरक (जिक ओ डी एस);
- (iii) उच्च तापक्रम परिवर्तक उत्प्रेरक (एच टी एस);
- (iv) निम्न तापक्रम परिवर्तक उत्प्रेरक (एल टी एस);
- (v) सैकण्डरी रिफार्मिंग केटालिस्ट (एस आर);
- (vi) मेथेनेशन उत्प्रेरक (मेथ)

इस अधिसूचना में उपरोक्त उत्प्रेरकों का उल्लेख संबंधित उत्प्रेरकों के रूप में लिया गया है।

ख. आवेदन की प्रारम्भिक जांच से कुछ कमियों का पता चला जो याचिकाकर्ताओं को बतला दी गई थी;

ग. प्राधिकारी ने, याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर डेनमार्क में निर्मित अथवा वहां से निर्यातित संबंधित उत्प्रेरकों के आयात के खिलाफ जांच शुरू करने के निर्णय लिया। प्राधिकारी ने नियमों के उपनियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में डेनमार्क के दूतावास को सूचित किया;

घ. प्राधिकारी ने 6-9-1996 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया, जिसके द्वारा डेनमार्क में निर्मित अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध उत्प्रेरक जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची 1 के सीमाशुल्क अध्याय 38 और 98 में वर्गीकृत हैं, के आयात से संबंधित एंटी डम्पिंग जांच शुरू की गई;

ङ. प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध करवाया गया) और उद्योग संगठनों को भेजी और नियम 6(2) के अनुसार उन्हें अवसर दिया कि वे 40 दिन के भीतर लिखित रूप में अपने दृष्टिकोण की जानकारी दें।

च. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध उत्प्रेरकों के ज्ञात आयातकों को सार्वजनिक सूचना की प्रतियां भेजी और उन्हें सलाह दी कि पत्र मिलने के चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने दृष्टिकोण से अवगत करवाएं;

छ. केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) से भी अनुरोध किया गया कि जांच की अवधि के दौरान की संगत सभी बिल ऑफ एन्ट्रीज की प्रतियां उपलब्ध कराई जाएं। लेकिन सी बी ई सी से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई;

ज. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की प्रतियां ज्ञात निर्यातक और डेनमार्क के दूतावास को प्रदान की;

झ. प्राधिकारी ने मै. हाल्दोर टोपशू ए एस, डेनमार्क (जिसे इसके बाद हाल्दोर टोपशू या एच टी ए एस कहा जाएगा) से संगत सूचना पाने के लिए एक प्रश्नावली भेजी; हाल्दोर टोपशू ने दिनांक 4-10-1996 को फैक्स द्वारा समय सीमा को दो महीना बढ़ाने का अनुरोध किया। तथापि कम्पनी ने दिनांक 24-10-1996 के पत्र के जरिए उस निवेदन में संशोधन कर 8-11-1996 तक का समय मांगा जिसकी अनुमति प्राधिकारी ने दे दी थी। निर्यातक ने निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर पेश कर दिया;

ञ. डेनमार्क के नई दिल्ली स्थित दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच आरंभ किए जाने के संबंध में सूचना दी गई जिसमें यह अनुरोध किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों का निर्धारित समय के अंदर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें। निर्यातक को भेजी गई प्रश्नावली और याचिका की एक प्रति दूतावास को भी भेजी गई;

ट. भारत में संबद्ध उत्प्रेरकों के निम्नलिखित आयातकों को प्रश्नावली भेजी गई, जिसमें नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगी गई ;

- (1) कृषक भारती कोओपरेटिव लिमि. सूरत;
- (2) नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमि. विजयपुर;
- (3) इन्डो गल्फ फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स लिमि.;
- (4) इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर्स कोओपरेटिव लिमि.;
- (5) नागार्जुन फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स लिमि. काकिनाडा;
- (6) स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमि. राऊरकेला;
- (7) श्रीराम फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स लिमि. कोटा;
- (8) मद्रास फर्टिलाइजर्स लिमि. मद्रास;
- (9) फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स ट्रावनकोर लिमि. उद्योग मंडल;
- (10) टाटा कैमिकल्स लिमि. बदायूं;
- (11) बिदल एग्रो कैमिकल्स लिमि. शाहजहांपुर;

निम्नलिखित सूचना प्राप्त हुई;

- (i) स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमि., राऊरकेला कोई आयात नहीं।
- (ii) नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमि. विजयपुर इसने एच टी ए एस से एच टी एस का निर्यात किया जिसका ब्यौरा निम्नलिखित है:

उत्प्रेरक	पी ओ तिथि	बीजक तिथि	मात्रा (किग्रा)/किग्रा	दर रूपया/किग्रा
एच टी एस	***	***	***	***
(iii) इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर्स कोओपरेटिव लिमि. बरेली अपने ए ई पी प्लांट के लिए इसने डेनमार्क से निम्नलिखित उत्प्रेरक का आयात किया				

उत्प्रेरक	पी ओ तिथि	बीजक तिथि	मात्रा (किग्रा)	मूल्य (डी एम)
जिक ओ. डी. एस.	***	***	***	***

- (iv) मद्रास फर्टिलाइजर्स लिमि. कोई आयात नहीं
- (v) टाटा कैमिकल्स लिमि. कोई आयात नहीं

(ठ) घरेलू उद्योग को हुई क्षति सूचना पीडिल और यूसिल से मांगी गई थी;

(ड) प्राधिकारी द्वारा मौका मुआयना के लिए गठित अधिकारियों के एक दल ने यूसिल के कोचीन स्थित कार्यालय और कारखानों का दौरा किया;

(ढ) भारत में संबद्ध उत्प्रेरकों की इष्टतम उत्पादन लागत और निर्माण तथा बिक्री लागत का जायजा लेने के लिए एक लागत जांच भी की गई। यह जांच सामान्य स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों (जी ए पी पी) तथा याचिकाकर्ताओं द्वारा पेश की गई सूचनाओं पर आधारित थी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी था कि क्या डम्पिंग मार्जिन से एन्टी डम्पिंग शुल्क घरेलू उद्योग की हानि को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा;

1 अप्रैल, 1994 से 30 सितम्बर, 1995 तक की अवधि के दौरान जांच की गई।

ख. याचिकाकर्ताओं के विचार

याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिकाओं और बाद में पेश कागजातों में निम्नलिखित बड़े मुद्दों को उठाया है:—

पाटन-पर

(क) हाल्दोर टोपशू भारतीय व्यापार पर एकाधिकार करने के उद्देश्य से संबद्ध उत्प्रेरक मदों को उम्प कर रहा है ताकि भारतीय उद्योग को हानि हो और वह अपने आर एंड डी क्रियाकलापों का वित्तपोषण करने के योग्य न हो सके;

(ख) हाल्दोर टोपशू की रणनीति बिना स्वामित्व वाले उत्प्रेरकों के लिए बहुत कम कीमतें उद्घृत करना है तथा उससे होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति ऊँची कीमतों पर अपने स्वामित्व वाले उत्प्रेरक बेचकर करना है। क्षतिपूर्ति प्रभावों के लिए इन उत्प्रेरकों की बिक्री के मामले में निर्यातक ने बहुत ही कम कीमतें उद्घृत की हैं। अतः निर्यातक प्रतियोगिता के अभाव में देश से धन बटोर सकेगा;

(ग) यूरोप की सभी कम्पनियां अपने सूची मूल्य के बराबर मूल्य पर विक्रय कर रहीं हैं;

(घ) मध्य पूर्व या दक्षिण पूर्व एशिया के लिए हाल्दोर टोपशू का निर्यात मूल्य यूरोपीय मूल्य से बराबर या उससे अधिक है;

(ङ) यूरोपियन उत्पादनकर्ताओं की उत्पाद लागत यूसिल की उत्पादन लागत से बहुत अधिक है।

(च) हाल्दोर टोपशू भारत को यूरोपीय लागत मूल्य के आधे मूल्य पर निर्यात करता है;

(छ) हाल्दोर टोपशू औपचारिक निषिद्धाक्रम मूल्य के 42% तक की एक बड़ी छूट देता है;

(ज) वर्तमान निर्यात मूल्य 10 वर्ष पहले प्रभावी मूल्य से कम है।

क्षति पर

हालदर टोपशू की डंपिंग से निम्नलिखित कारणों से याचिकाकर्ता को क्षति हुई :

(क) बिक्री कारोबार में बहुत ह्रास हुआ;

(ख) याचिकाकर्ता को बिक्री कीमतें कम करने को बाध्य होना पड़ा जिसके कारण वित्तीय हानियां हुई;

(ग) भारतीय उद्योग के बाजार शेयर 94% से कम होकर 71% तक हो गए।

(घ) याचिकाकर्ता की उत्पादकता में भी कमी आई;

(ङ) याचिकाकर्ता अपने अनुसंधान तथा विकास संबंधी प्रयासों को जारी नहीं रख सके जो कि उद्योग के लिए महत्वपूर्ण हैं।

ग. निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

3. एच टी ए एस द्वारा आयातकों द्वारा तथा ऐसी अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचार जिन्होंने प्राधिकारी को उत्तर भेजा है, निम्नानुसार हैं:

हालदर टोपशू

समान वस्तुओं पर

क. एच टी ए एस द्वारा बनाए गए एच टी एस का कच्चा माल याचिकाकर्ता द्वारा बनाए गए एच टी एस के कच्चे माल से भिन्न है। ये दोनों समान वस्तुएं नहीं हैं।

पाटन पर

(क) भारत में कैटेलिस्ट को कोई डम्पिंग नहीं हुई है।

(ख) एच डी एस कैटेलिस्ट का डेनमार्क में निर्माण नहीं हुआ था। हालदर टोपशू ने यू. एस. ए. में अपनी सहायक कम्पनी से इसे प्राप्त करके भारत को निर्यात किया था चूंकि डेनमार्क मूल देश नहीं है, इसलिए एच डी एस कैटेलिस्ट के संबंध में जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए।

(ग) यदि धारा 9क(1) ग(1)(i) के अनुसार सामान्य मूल्य उपलब्ध नहीं होता है, तो धारा 9क(1) ग(ii) के अनुसार सामान्य मूल्य निकाला जाना चाहिए जो उक्त धारा में दिए गये दो विकल्पों में से किसी भी तरीके से सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की अनुमति देता है यह आवश्यक नहीं है कि इन विकल्पों का प्रयोग उसी क्रम में किया जाए जिस क्रम में ये उक्त धारा में दिए गए हैं। अतः निर्यातक ने धारा 9क(1) ग(ii)(ख) के अनुसार सामान्य

मूल्य उपलब्ध कराने का निश्चय किया है। निर्यातक ने तर्क किया है कि धारा 9क(1) ग(ii) (क) के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण (अन्य देशों को साथ तुलनीय निर्यात कीमत) करने में स्व-निर्मित स्वेच्छाचारिता का प्रयोग किया गया है।

(घ) चारों कैटेगिस्ट की बिक्री कीमत लाभ सहित उत्पादन लागत से अधिक रही हैं। शेष दो कैटेगिस्टों (जैड एन ओ डी एस और एल टी एस) की बिक्री कीमत से विशेष कारणों से पूर्णतः लागत कवर नहीं हुई।

(ङ) एच टी ए एस के उत्पाद भारत में अथवा पूरे विश्व में सर्वोच्च हैं।

(च) एच टी ए एस ने याचिकाकर्ताओं द्वारा बताई गई उच्च कीमतों पर आर्डर प्राप्त नहीं किए :

(छ) ई. ई. सी उत्पादन लागत अथवा ई. ई. सी सूची कीमत जैसा कुछ भी नहीं है। उत्पादन की लागत अलग-अलग उत्पादकों के मामले में अलग अलग है। प्रतिपाटन शुल्क का संबंध विशिष्ट निर्यातक से है न कि किसी विशिष्ट देश से।

(ज) एच टी ए एस को दक्षिण पूर्व एशियाई अथवा मध्यपूर्व कीमतों पर आर्डर प्राप्त नहीं हुए जैसा कि याचिकाओं में उल्लेख किया गया है।

क्षति पर

(क) याचिकाकर्ता ने क्षति से संबंधित सूचना को गुप्त रखा जिससे टिप्पणी करना कठिन हो गया है। इस प्रकार की सूचना को छुपाकर रखना प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करना है।

(ख) कैटेगिस्टों की भांग में कैटेगिस्टों की आयु के हिसाब से वर्षानुवर्ष आधार पर उतार चढ़ाव होता है बिक्री क्षमता उपयोग स्टाक की स्थिति आदि वर्षानुवर्ष परिवर्तित होती रहती है। फलस्वरूप ये कारक क्षति के संकेतक नहीं हैं और इनका कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता।

(ग) क्षति पर कैटेगिस्ट कार टिप्पणियां निम्नानुसार हैं:

- (i) एच डी एस : क्षमता उपयोग 4.1% (1992-93) से बढ़कर 9.9% (1994-95) तक हो गया। रोजगार भी 3 से बढ़कर 13 हो गया है। बिक्री भी लगभग तीन गुणा हो गई है और कोई अन्तिम (क्लोसिंग) स्टाक नहीं है।
- (ii) जैड एन ओ डी एस : क्षमता उपयोग में 1992-93 की तुलना में 1994-95 में नाममात्र की वृद्धि हुई है। स्टाक में पर्याप्त रूप से कमी आई है और बिक्री में सुधार दिखाई दिया।
- (iii) एस आर : वर्ष 1994-95 के दौरान इस कैटेगिस्ट का कोई आयात नहीं किया गया, अतः क्षमता उपयोग में कमी का कारण डंपिंग को नहीं माना जा सकता।
- (iv) एच टी एस : पिछले वर्ष की तुलना में 1993-94 में क्षमता उपयोग में कमी आने का कारण डंपिंग को नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि 1993-94 में इस कैटेगिस्ट का कोई आयात नहीं हुआ। इस कैटेगिस्ट की क्षमता उपयोग के उतार चढ़ाव के अन्य कारण हैं;
- (v) एल टी एस : पिछले वर्ष की तुलना में 1993-94 में क्षमता उपयोग में कमी का कारण निर्यात बिक्री है। अधिक प्रारंभिक स्टाक के कारण 1994-95 में बिक्री कम हुई।

(घ) धारा 9 क में "एंटी-डंपिंग ड्यूटी" लगाने की व्यवस्था की गई है। दो अलग मार्जिन तथा प्रतिपाटन शुल्क की दरें नहीं हो सकती।

(ङ) याचिकाकर्ता की प्रार्थना शीर्षक 38.15 के तहत संबंधित कैटेगिस्टों की सम्बन्ध में है। केन्द्रीय सरकार द्वारा शून्य शुल्क दर पर परियोजना आयात की अनुमति लोक हित में दी गई है।

(च) यह एक संस्थापित कानून है कि अधिनियम के तहत शुल्क लगाना एक नियम है और छूट देना एक अपवाद है। क्षति के मार्जिन के लिए रियायती दर को आधार मानना तर्क संगत नहीं है।

(छ) आयातों के सीमाशुल्क सहित लैंडिड मूल्य के परिणाम स्वरूप कोई क्षति मार्जिन नहीं होगा। अतः कोई प्रतिपाटन शुल्क लगाए जाने योग्य नहीं है।

(ज) एच टी ए एस एकमात्र ऐसी कंपनी है जो सामग्री के साथ-साथ तकनीकी जानकारी प्रदान करती है। आयातकों द्वारा एच टी ए एस को प्राथमिकता देने का यही कारण है। आयातकों ने एच टी ए एस को वार्ताओं के आधार पर कीमतों में समानता लाने के लिए अनुरोध किया था यद्यपि कंपनी सामान्य तथा यह सुनिश्चित करती है कि आपूर्तियों उत्पादन लागत तथा निर्धारित मूल्य से कम कीमत पर न दी जाएं।

(झ) निर्यातक को आयातकों के कहने पर कीमतें कम करने के लिए बाध्य होना पड़ा और पर्याप्त छूट देनी पड़ी इसे डंपिंग का नाम नहीं दिया जा सकता।

(ञ) पी डी आई एल एक रूपण कंपनी बन गई है। इसकी लागत का डेनमार्क से होने वाले आयातों पर नहीं डाला जाना चाहिए।

घ. उठाए गए मुद्दों की जांच

4. इस रिपोर्ट को तैयार करते समय, आयातकों, याचिकाकर्ताओं तथा अन्य इच्छुक पार्टियों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की गई है तथा उन पर विचार किया गया है और उनके बारे में इस रिपोर्ट में उचित स्थानों पर विचार-विमर्श किया गया है।

ड. विचारार्थ उत्पाद

5. वर्तमान जांच में विचारार्थ उत्पादों की व्याख्या निम्नलिखित नीचे दी गई है:

- (i) हाइड्रोडीसल्फराइजेशन कैटेलिस्ट (एच डी एस)
- (ii) जिंक आक्साइड डीसल्फराइजेशन कैटेलिस्ट (जैड एन ओ डी एस)
- (iii) हाइ टैम्परेचर शिफ्ट कैटेलिस्ट (एच टी एल)
- (iv) लो टैम्परेचर शिफ्ट कैटेलिस्ट (एल टी एस)
- (v) सैकेंडरी रिफार्मिंग कैटेलिस्ट (एस आर)
- (vi) मैथानेशन कैटेलिस्ट (एम ई टी एच)

इस रिपोर्ट में इन कैटेलिस्टों का उल्लेख सब्जैक्ट कैटेलिस्ट के रूप में किया गया है।

इन जांच-परिणामों में इन कैटेलिस्टों का उल्लेख संबंधित कैटेलिस्ट के रूप में किया गया है।

सब्जैक्ट कैटेलिस्ट का वर्णन, आकार, रूप तथा प्रयोग निम्नानुसार है:

क. एच डी एस : कोबाल्ट मोलीब्डेनम/निकेल मोलीब्डेनम पर आधारित कैटेलिस्ट आन हाइ सरफेस एल्यूमीना कैरिअर इन दफोर्म आफ रैगूलर एक्सट्रक्शन एंड हाइ ज्योमेट्रिक सरफेस एक्सट्रक्शन।

ख. जैड एन ओ डी एस : जिंक आक्साइड पर आधारित कैटेलिस्ट जिसमें विशेष भौतिक तथा टैक्सचरल गुण हैं, जो पैल्लैड्स के रूप में उचित बाईडर्स के साथ मिला हुआ है।

ग. एस आर : अल्फा अल्यूमीना कैरिअर पर निवल आधारित कैटेलिस्ट अथवा रिंग्स/हाई ज्योमेट्रिक सरफेस रिंग्स के रूप में कैल्सियम अल्यूमीनेट कम्पाउंड

घ. एच टी एस : यह एक आयरन क्रोम तथा कापर प्रोमोटिड आयरन क्रोम आधारित कैटेलिस्ट है।

ङ. एल टी एस : यह मोलियों के रूप में अल्यूमीना आधारित कैटेलिस्ट पर कापर जिंक है।

च. एम ई टी एच : टेबेलैड्स और/या स्फीयर के रूप में यह निवल अल्यूमीना पर आधारित कैटेलिस्ट है।

प्रत्येक सब्जैक्ट कैटेलिस्ट के अपनी-अपनी भौतिक तथा रासायनिक गुण हैं। प्रत्येक कैटेलिस्ट के उत्पादन के लिए अलग-अलग कच्चे माल, उपकरणों तथा प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। प्रत्येक कैटेलिस्ट का उपयोग अलग-अलग ढंग से किया जाता है। अतः सभी सब्जैक्ट कैटेलिस्ट मौजूदा जांच के लिए भिन्न तथा अलग वस्तु हैं।

6. कैटेलिस्ट एक अकार्बनिक पदार्थ है जो प्रोसेस के दौरान अपने में रासायनिक परिवर्तन के बिना भी रासायनिक प्रति क्रिया में तेजी लाता है अथवा उसे रोकता है। कैटेलिस्ट का प्रयोग किसी निश्चित प्रतिक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता है। आपरेशन की क्षमता को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के कैटेलिस्टों की आवश्यकता हो सकती है। होने वाली रासायनिक प्रति क्रिया पर यह निर्भर करता है कि उसमें किस प्रकार के कैटेलिस्ट की आवश्यकता होगी। कैटेलिस्टों को विशेष प्रतिक्रिया के लिए ही तैयार किया जाता है। प्रत्येक कैटेलिस्ट का अलग बल्क घनत्व भौतिक तथा रासायनिक गुण होते हैं।

7. सब्जैक्ट कैटेलिस्ट टैबलैड्स, रिंग्स स्फीयर्स अथवा सक्सट्रसनस के रूप में ठोस होते हैं। कैटेलिस्ट का उत्पादन सामान्यतया बजन के रूप में पाया जाता है किन्तु उनकी बिक्री अक्सर मात्रा में की जाती है।

8. सब्जैक्ट कैटेलिस्ट का सीमाशुल्क अध्याय 38 के तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1995 की अनुसूची 1 के 98 के तहत वर्गीकरण किया जाता है तथापि यह वर्गीकरण केवल संकेतक है और मौजूदा जांच के कार्य क्षेत्र में किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

सीमाशुल्क कोड 98 के अंतर्गत आयातित कैटेलिस्ट पर शून्य दर से सीमाशुल्क लगता है।

च. समान वस्तुएं

9. एच टी एस को छोड़कर जहाँ तक सब्जैक्ट कैटेलिस्ट का संबंध है इसमें कोई विवाद नहीं कि याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित तथा बेचा गया कैटेलिस्ट डेनमार्क से आयातित कैटेलिस्ट से सभी गुणों में समान है। जहाँ तक एच टी एस का संबंध है, निर्यातक ने इस बात का तर्क दिया कि एच टी ए एस द्वारा उत्पादित एच टी ए एस क्रोमियम द्वारा स्थिरीकरण के साथ आयरन आक्साइड से बनाया जाता है। निर्यातक ने इस बात के लिए तर्क दिया कि सभी कैटेलिस्ट विनिर्माता एस टी एस के रूप में क्रोमियम स्टेबलाइज्ड आइरन आक्साइड का उपयोग कर रहे हैं जबकि एस टी ए एस ने कापर संबंधित क्रोमियम स्टेबलाइज्ड आयरन आक्साइड कैटेलिस्ट को एच. टी. एफ. के रूप में विकसित किया है। एच. टी. एस. के अनुसार यह नया उत्पाद है जिसका निर्माण याचिकाकर्ता द्वारा जांच की अवधि में नहीं किया गया और यह उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एच. टी. एफ. के समान उत्पाद नहीं है।

10. यह देखा जा सकता है कि एच०टी०एफ० ने केवल यही मांग की है कि उनके द्वारा उत्पादित ऐसे कच्चे माल के तैयार किया गया है एच० टी०एफ० जो अन्य सभी उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त किए गए कच्चे माल से भिन्न हैं। यह निर्यातक का तर्क नहीं है कि विचाराधीन उत्पाद अर्थात् एच. टी. एफ.

का घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित कैटलिस्ट से वाणिज्यिक रूप से और/या तकनीकी रूप से प्रतिस्थापन नहीं हो सकता है/उपयुक्त नियम के नियम 2 (घ) के कार्यक्षेत्र में केवल वे सामान ही नहीं आते हैं जो कथित डम्प किए गए उत्पादों से सभी प्रकार से समान हैं। अर्थात् उसमें वे उत्पाद भी शामिल हैं जिनकी विशेषताएं बिल्कुल मिलती हैं अतः प्राधिकारी का दृढ़तापूर्वक यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एच.टी.एस. नियम 2 (क) के अनुसार एच. टी. एस. द्वारा निर्यातित एच.टी.एस. के समान वस्तु है।

छ. घरेलू उद्योग

11. मैसर्स यूनाइटेड कैटलिस्ट इंडिया लि. 402/403 मानसरोवर, 90 नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019 और प्रोजेक्टस एवं डेवलपमेंट इंडिया लि. ए 14, सैक्टर, नौएडा-201301 ने अलग-अलग याचिका दायर की है। यू सी आई एफ में सभी कैटलिस्ट विषयों के लिए याचिका दायर की है जबकि पी डी आई एल याचिका एच डी एस का छोड़कर सभी कैटलिस्ट विषयों के लिए हैं क्योंकि कम्पनी इस कैटलिस्ट का उत्पादन नहीं करता है। मैसर्स आई सी आई लि. पंकी, कानपुर-208001 भी भारत में कैटलिस्ट का एक उत्पादक है। तथापि इसने 1992-93 से इन कैटलिस्ट तत्व का उत्पादन नहीं किया है। याचिकाकर्ताओं का उत्पादन भारत में कैटलिस्ट तत्व के उत्पादन में सबसे अधिक बनता है। याचिका पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत याचिका के रूप में विचार किया जा सकता है।

12. याचिकाकर्ताओं का उत्पादन भारत में जांच अवधि के दौरान कैटलिस्ट तत्व के कुल घरेलू उत्पादन में सबसे अधिक उत्पाद अंश बनता है। याचिका कर्ता उपरोक्त नियम 2 (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का स्थान लेता है।

सामान्य मूल्य

13. धारा 9 क (1)(ग) के अंतर्गत एक अनुच्छेद के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है।

(1) उप धारा (6) के अंतर्गत निर्मित नियमों के अनुसार साधारण व्यापार के रूप में जब निर्यातक देश में अथवा यथा निर्धारित दूसरे देश में उपभोग के लिए हो तो समान वस्तु के लिए तुलनीय मूल्य; अथवा

(2) जब निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में साधारण व्यापार के रूप में समान वस्तु की कोई बिक्री न हो अथवा जब विशेष बाजार स्थिति के कारण अथवा निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में कम बिक्री हो तो ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती है अर्थात् सामान्य मूल्य इस प्रकार होगा—

(क) निर्यातक देश अथवा क्षेत्र अथवा उप-धारा (6) के अधीन निर्मित नियमों के अनुसार यथा निर्धारित कोई उपयुक्त तीसरे देश से निर्यात करने पर समान वस्तु का तुलनीय प्रतिनिधात्मक मूल्य; अथवा

(ख) उप-धारा (6) के अन्तर्गत निर्मित नियमों के अनुसार यथा निर्धारित प्रशासनिक, बिक्री एवं सामान्य लागत तथा लाभ के लिए उचित अतिरिक्त मूल्य के साथ मूल देश के कथित वस्तु की उत्पादन लागत। बशर्ते कि मूल देश को छोड़कर किसी अन्य देश से वस्तु के आयात के मामले में और जहां निर्यातक देश से वस्तु का केवल पोतलदान किया गया हो अथवा निर्यातक देश में ऐसी वस्तु का उत्पादन नहीं किया जाता हो अथवा निर्यातक देश में कोई तुलनीय मूल्य न हो तो सामान्य मूल्य का निर्धारण मूल देश के मूल्य के संदर्भ में किया जायेगा।

14. एच टी ए एस ने तर्क दिया है कि यदि सामान्य मूल्य धारा 9 के (1) सी (i) के अनुसार उपलब्ध नहीं हुआ तो इसे धारा 9 क (1) सी (ii) के अनुसार निकाला जा सकता है जिसमें कथित धारा में प्रदत्त दो विकल्पों में से किसी एक के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की अनुमति है। यह जरूरी नहीं है कि इन विकल्पों का उपयोग कथित धारा में दिए गए क्रमानुसार ही किया जाये। अतः निर्यातक ने धारा 9क (1) सी (ii) (क) के अनुसार सामान्य मूल्य उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। निर्यातक ने तर्क दिया है कि धारा 9क (1) सी (ii) क के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण में “इन बिल्ट स्वेच्छा चारिता” का उल्लेख है। (अन्य देशों के साथ तुलनीय निर्यात मूल्य) इसमें आगे तर्क दिया है कि चार कैटलिस्टों की बिक्री लाभ सहित उत्पादन लागत से अधिक रही है। शेष दो कैटलिस्टों (जैड एन ओ डी एस और एल टी एस) के बिक्री मूल्य में विशेष कारणों से, लागत पूरी तरह कवर नहीं होती है।

प्राधिकारी यह बात नोट करता है कि धारा 9क(1) सी (i) के अंतर्गत साधारण व्यापार के रूप में किसी वस्तु के बारे में सामान्य मूल्य का अर्थ समान वस्तु के लिए तुलनीय मूल्य है जबकि इसका अर्थ निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में उपभोग की वस्तु के रूप में लिया गया है।

खण्ड (2) में उप खण्ड (क) तथा (ख) के अंतर्गत सामान्य मूल्य का परिकलन करने की दो विधियां निर्धारित हैं। तथापि, नोट करने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि खण्ड (2) का सहारा तभी और केवल तभी किया जा सकता है जबकि निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में साधारण व्यापार के रूप में समान वस्तु की कोई बिक्री न हो रही हो। मौजूदा मामले में, एच टी एस ने यह तथ्य अस्वीकार नहीं किया है कि उन्होंने इस वस्तु की बिक्री यूरोप के अन्य देशों में की है जो यूरोपिक संघ का एक भाग है। यूरोपीय संघ एक ऐसा कस्टम संघ है जहां कोई सीमाशुल्क संबंधी बाधाएं अथवा सीमा शुल्क नहीं हैं। और जहां गैर-सदस्य देशों द्वारा आयातों पर समान दर से शुल्क लगाया जाता है। यहां तक कि पाटनरोधी शुल्क और प्रतिकारी उपाय भी पूरे यूरोपीय संघ को एक ईकाई मानकर समग्र रूप से किए जाते हैं बिना इस बात पर विचार किए कि निर्यात यूरोपीय संघ के कुछ संघों को किया गया है। जैसा कि धारा 9क (1) सी (i) के अंतर्गत परिकल्पना की गई है, यूरोपीय संघ को एक राज्य क्षेत्र के रूप में माना जाता है। निर्यातकों के प्रतिनिधियों को यह कहा गया था कि वे उन देशों को होने वाले अपने निर्यात मूल्यों के बारे में सूचना उपलब्ध कराएं किन्तु सूचना न तो निर्यातक से और न ही भारत में उसके प्रतिनिधि

की ओर से प्राप्त हुई है। अतः प्राधिकारी यह समझता है कि एच टी ए एस ई यू क्षेत्र में प्रचलित सामान्य मूल्य के बारे में सूचना देने में असफल रहा है। हालांकि कानूनी प्रावधानों के अनुसार एक उचित सामान्य मूल्य तय करने के लिए प्राधिकारी के पास सूचना उपलब्ध है।

जहां तक निर्यातक द्वारा किए गए इस दावे का संबंध है कि उसके पास उपखण्ड (2) (क) अथवा उप खण्ड (2) (ख) के अंतर्गत सूचना देने का विकल्प है। इसमें प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि खण्ड (2) स्वयं ही यहां प्रयोग नहीं किया गया है क्योंकि निर्यातक के क्षेत्र में सामान्य व्यापार के रूप में तुलनीय मूल्य मौजूद है किन्तु निर्यातक ने प्राधिकारी को यह सूचना प्रदान करने में कोई सहयोग नहीं दिया है। इस तथ्य के रहते हुए कि खण्ड (2) उपरोक्त विचार-विमर्श के आलोक में लागू नहीं हो सकता, निर्यातक का यह दावा मान्य नहीं है कि उसके पास उप-खण्ड (ii) (क) अथवा (ii) (ख) में से किसी को भी चुनने का विकल्प है क्योंकि प्राधिकारी द्वारा नियम 6 (4) के अंतर्गत मापी गई सूचना निर्यातक का दायित्व है। इस बारे में नियमानुसार मांगी गई सभी तथ्यों पर विचार करने के पश्चात् उप खण्ड (क) अथवा (ख) के अंतर्गत सामान्य मूल्य निर्धारित करना प्राधिकारी पर निर्भर करता है।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा प्रदत्त लागत सूचना को अस्वीकार कर दिया क्योंकि मूल्य तय करने के लिए इस विधि का सहारा लेना विधि सम्मत नहीं होगा। अतः प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना का उपयोग करते हुए सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। याचिका कर्ताओं ने यूरोपीय समुदाय के अन्य आपूर्तिकर्ताओं को प्राप्त कुछेक आदेशों की प्रतियां प्रस्तुत की हैं। प्राधिकारी ने पाया है कि याचिकाकर्ताओं ने साक्ष्य के रूप में जो मूल्य सूची दी है और जो यूरोपीय क्षेत्र में प्रचलित हैं वे एक जैसी हैं। इसलिए एच डी एस को छोड़कर सभी संबंधित कैटालिस्ट के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित करने के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी मूल्य सूची का उपयोग करना उचित समझते हैं। एच डी एस पर निम्न पैरों में अलग से कार्रवाई की गई है।

15. एच डी एस मामले में निर्यातक ने दावा किया है कि वे डेनमार्क में कैटालिस्ट का विनिर्माण नहीं करते हैं बल्कि उन्होंने यू एस ए में अपने सहयोगियों से इसकी खरीद कर भारत को निर्यात किया है। अतः कैटालिस्ट का सामान्य मूल्य धारा 9 क (1) सी के प्रावधानों के अनुसार निकाला जाना अपेक्षित है। तदनुसार प्राधिकारी ने अपने प्रतिनिधि के माध्यम से दिनांक 12-12-96 के पत्र द्वारा निर्यातक को अनुरोध किया कि वह यू एस ए में एच डी एस के सामान्य मूल्य की जानकारी निर्यातक ने अपने दिनांक 3-1-97 के पत्र के द्वारा अपने उस दावे को दोहराया है। उसने प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में किया था। निर्यातक ने आगे अनुरोध किया कि चूंकि उसने डेनमार्क में इस सामान का उत्पादन नहीं किया है। इसलिए उस विशेष कैटालिस्ट के बारे में जांच खत्म कर दें। प्राधिकारी ने यह देखा है कि निर्यातक प्राधिकारी द्वारा 12-12-96 के पत्र द्वारा सूचित किए जाने के बावजूद यू एस ए में प्रचलित सामान्य मूल्य की सूचना देने से बचता रहा। सामान्य मूल्य निर्धारण संबंधी नियमों में, जैसाकि उपर उल्लिखित है, वह विधि दी गई है जिसका अनुसरण मूल देश के अलावा किसी उचदेश्य बंधवा क्षेत्र से निर्यात किए जाने वाले सामानों के बारे में सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए किया जा सकता है। नियमों के तहत एक आर सामान्य मूल्य निर्धारित हो जाने पर इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य के संदर्भ में पाटन होने और उसकी मात्रा का मामला बन जाता है। इस आधार पर जांच समाप्त करने का कोई आधार अथवा कारण नहीं है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी ने अपने उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण यू एस ए में प्रचलित कीमतों के अनुसार करने का विचार किया है।

याचिका कर्ताओं ने जांच अवधि के दौरान यू एस ए में प्रचलित एच डी एस के मूल्यों समेत सभी कैटालिस्ट के मूल्य प्रस्तुत किए हैं। चूंकि यह सुझाव देने का उचित साक्ष्य है कि यह मूल्य सूची यूरोपीय बाजार में प्रचलित वास्तविक मूल्यों को दर्शाता है और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि इसके विपरीत कोई साक्ष्य नहीं है, अतः प्राधिकारी ने एच डी एस का सामान्य मूल्य तय करने के लिए यू एस ए में प्रचलित मूल्य सूची को अपनाया है।

(ज) निर्यात मूल्य

16. याचिका कर्ताओं ने अपनी याचिकाओं में एच टी ए एस द्वारा किए गए कारोबार के आधार पर निर्यात मूल्य का ब्यौरा दिया है। कार्रवाई करने के लिए इन्हीं का सहारा लिया गया है। एच टी ए एस में जांच अवधि के दौरान निर्यात किए गए सभी संबंधित कैटालिस्टों का ब्यौरा दिया है। जांच करने पर यह पाया गया कि याचिकाकर्ता द्वारा निर्यात कारोबार के बारे में दी गयी सूचना एच टी ए एस द्वारा प्रदत्त कारोबार सूचना से नहीं मिलती है। अतः निर्यातक को जांच अवधि के दौरान किए गए सभी कारोबारों के बारे में ब्यौरा भेजने के लिए अनुरोध किया गया था। लेकिन निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान उसके द्वारा किए गए सभी कारोबार का ब्यौरा नहीं भेजा। चूंकि निर्यातक ने प्राधिकारी द्वारा वांछित पूर्ण सूचना नहीं भेजी है। इसलिए निर्यात मूल्य याचिका कर्ता और एच टी ए एस दोनों द्वारा भेजी गई सूचना के आधार पर निकाला गया है।

तुलना

17. तुलना से संबंधित नियम निम्नानुसार हैं :

डंपिंग का मार्जिन निकालते समय नामित प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के उस स्तर पर सामान्यतया कारखाना द्वारा स्तर पर की जाएगी और यथासंभव उसी समय की गई बिक्री के संबंध में की जाएगी। जो अन्तर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर छूट दी जाएगी; अन्तर में शामिल हैं—बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, वास्तविक विशेषताएं तथा कोई अन्य अन्तर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित की जाती है।

18. इस तुलना से निम्नलिखित डंपिंग मार्जिन दिखाई देता है:

यू. एस. डालर प्रति लीटर

क्र. सं.	कैटेलिस्ट का नाम	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत जब निम्नलिखित के अंतर्गत आयात की गई	डंपिंग मार्जिन जब निम्नलिखित के अंतर्गत आयात की गई
1.	हाइड्रोडीसल्फेरेशन	38.15	98.01	38.15
2.	जिक आक्साइड डीसल्फराइजेशन	7.50	4.28	3.94
3.	हाई टैम्परेचर शिफ्ट	8.00	3.47—5.41	3.15
4.	लो टैम्परेचर शिफ्ट (एल टी एस);	12.00	6.00	5.61
5.	सैकण्डरी रिफार्मिंग (एस आर);	14.00	...	5.54
			(—3.00)	
6.	मैथानेशन (मैथ)	15.00	6.39	6.39
				8.61
				8.61

क्षति

19. ऊपर नियम 11 अनुबंध-2 के अंतर्गत जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा। ऐसा करते समय सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा जिनमें शामिल हैं "—डम्प किए गए आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों पर परिणामी प्रभाव" कीमतों पर डम्प किए गए आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में डम्प किए गए आयातों द्वारा कीमतों में पर्याप्त कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में कीमतों को अन्यथा कम करना या कीमतों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गई होती।

20. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभावों की जांच करने के लिए उपर्युक्त नियम के अनुबंध 11(iv) के अनुसार प्राधिकारी ने ऐसे सूचकांकों पर विचार किया जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं, जैसे उत्पादन क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, कुल बिक्री आय, डंपिंग की मात्रा तथा मार्जिन की मात्रा आदि।

नियमों के अनुलग्नक 11 के पैरा (iv) के अनुसरण में समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंध में इस डम्प आयातों का प्रभाव निर्धारित किया जाएगा, जब उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादक की बिक्री तथा लाभ जैसे मानदण्डों के आधार पर उस उत्पादन की अलग पहचान की जा सकती हो। यदि उस उत्पादन की ऐसी अलग पहचान संभव नहीं है, तब डम्प आयातों के प्रभाव का निर्धारण सबसे छोटे समूह अथवा उत्पादों की श्रेणी के उत्पादन की जांच द्वारा किया जा सकता है, जिसमें ऐसे समान उत्पाद शामिल हैं जिनके संबंध में आवश्यक सूचना उपलब्ध कराई जा सकती है।

इस मामले में यह पाया गया है कि सब्जैक्ट कैटेलिस्ट की मांग समय-समय पर काफी अधिक बदलती रही है। विशेष मांग के इस स्वरूप का निर्माण करने वाला एक कारक कैटेलिस्ट की दीर्घ आयु होना है। यह भी पाया गया है कि यद्यपि विभिन्न प्रकार के कैटेलिस्टों के प्रयोग अति विशिष्टताएं अलग-अलग हैं, फिर भी ऐसी अनेक प्रक्रियाएं हैं जिनमें एक जैसे उपकरणों तथा सुविधाओं का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक प्रकार के कैटेलिस्ट की उत्पादन क्षमता भिन्न-भिन्न प्रकार के कैटेलिस्टों की मांग के आधार पर भिन्न-भिन्न है। इस तथ्य को देखते हुए कि उत्पादन प्रक्रियाएं तथा उत्पादन क्षमताएं विभिन्न अनुपातों में एक दूसरे पर आच्छादित रहते हैं, कैटेलिस्ट की प्रत्येक अलग-अलग किस्मों के लिए घरेलू उद्योग की क्षति का अनुमान लगाना उचित नहीं होगा। अतः प्राधिकारी नियमावली के अनुबंध 11 के पैरा 6 के अनुसार प्राधिकारी सभी 6 प्रकार के कैटेलिस्टों का एक साथ क्षति का अनुमान लगाना उचित समझता है।

क. डम्प किए गए आयातों की मात्रा तथा बाजार का हिस्सा याचिकाकर्ताओं ने यह रिपोर्ट दी है कि एच टी ए एस 1992 से सब्जैक्ट कैटेलिस्ट का भारत को निर्यात करने वाला एकमात्र निर्यातक है। याचिकाकर्ता ने यह संकेत दिया है कि एच टी ए एस की डम्पिंग शुरू होने से पहले भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा 93.9% या जो 71.5% तक गिरा है।

ख. घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक :

(i) उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

1992-93 और 1994-95 के बीच यू सी आई एल का समग्र क्षमता उपयोग 28% गिरा। याचिकाकर्ता ने बतलाया है कि भारत में कैटेलिस्ट का बाजार बढ़ने के बावजूद क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। भारत में कैटेलिस्ट की मांग बढ़ने के बावजूद, अन्य भारतीय उत्पादक मैसर्स आई सी आई ने 1992-93 से सब्जैक्ट कैटेलिस्ट में से किसी का भी उत्पादन नहीं किया है।

(ii) सम्पूर्ण मात्रा में बिक्री

1992-93 की तुलना में 1994-95 में घरेलू बाजार में यू सी आई एल की समग्र बिक्री 33 प्रतिशत तक गिरी है। यू सी आई एल ने सूचना दी है

कि डेनमार्क से निर्यातक को बिक्री से मुख्य हानि हुई है। याचिकाकर्ता ने सबजैक्ट कैटेलिस्ट के लिए आर्डर उपलब्ध न होने के कारण कारोबार खो दिया है। पी डी आई एल ने बतलाया है कि एच टी ए एस द्वारा निर्यातों के कारण पी आर कैटेलिस्ट के लिए आदेश प्राप्त नहीं हो सके।

(iii) बिक्री कीमत प्रवृत्ति

एच टी ए एस द्वारा दी गई कीमतों को ध्यान में रखते हुए याचिकाकर्ताओं को आर्डर प्राप्त करने के उद्देश्य से कीमतें कम करनी पड़ीं। यू सी आई एल को कीमतें अपनी सूची कीमतों से बहुत कम करने के लिए बाध्य होना पड़ा। यह भी देखा जा सकता है कि 1995-96 में यू सी आई एल द्वारा उद्धृत कीमतें उन कीमतों से महत्वपूर्ण रूप से कम हैं जिन पर कंपनी ने पिछले तीन वर्षों तथा 1983 में आदेश प्राप्त किए। पी डी आई एल के मामले में भी, 1994-95 में सबजैक्ट कैटेलिस्ट (जैड एन ओ डी एस के अतिरिक्त) की बिक्री कीमतें 1992-93 की कीमतों से महत्वपूर्ण रूप से कम थीं। प्राधिकारी ने नोट किया है कि एच टी ए एस द्वारा उद्धृत कीमतें उन कीमतों पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालेंगी जो घरेलू उद्योग भविष्य में देने वाला है। आजकल के एक ऐसे उद्योग में, जहां विपणन निविदा के आधार पर होता है, किसी भागीदार द्वारा दिया गया एक न्यूनतम प्रस्ताव भी उद्योग में दूसरों को कम कीमत उद्धृत करने के लिए बाध्य कर सकता है।

(iv) लाभ/हानि

काफी कम बिक्री मात्रा के साथ अत्यन्त कम कीमतों पर बिक्री के परिणामस्वरूप 1994-95 में यू सी आई एल को काफी वित्तीय हानि हुई, जबकि कंपनी लाभ कमा रही थी। पी डी आई एल के मामले में, पिछले वर्ष की तुलना में 1994-95 में हानि में वृद्धि हुई है।

(v) रोजगार तथा उत्पादकता

यू सी आई एल ने बतलाया है कि 1992-93 में उत्पादकता प्रतिवर्ष 5.02 मी. टन प्रति व्यक्ति थी जो 1994-95 में घटकर प्रतिवर्ष 2.68 मी. टन प्रति व्यक्ति रह गई अर्थात् इसमें काफी कमी आई। यू सी आई एल ने आरोप लगाया है कि लाभों में कमी इसके आर एंड डी प्रयासों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगी। इस बात को स्वीकार करना होगा कि कोई व्यापार संगठन आर एंड डी क्रियाकलापों में निवेश करने में समर्थ नहीं होगा जब तक इसके प्रचालन लाभ देने योग्य न हों। आर एंड डी क्रियाकलाप कैटेलिस्ट जैसे एक उद्योग के अस्तित्व के लिए अत्यावश्यक है। पी डी आई एल ने बतलाया है कि कम बिक्री की वजह से 1992-93 की तुलना में उत्पादकता में लगभग 32% कमी आई है।

21. इसलिए प्राधिकारी ने यह बात नोट की है कि घरेलू उद्योग को डेनमार्क मूल के अथवा वहां से निर्यातित आयातों से वास्तविक क्षति हुई है। यह स्पष्ट है कि डम्पिंग, यदि जारी रहा तो, इन कैटेलिस्टों की कीमतों पर बाजार में गम्भीर दबाव पड़ेगा और/अथवा निषेधात्मक प्रभाव पड़ेगा।

कारणात्मक संबंध

42. क्या डम्प किए गए आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक हानि हुई यह निर्धारित करने के लिए प्राधिकारी ने निम्नांकित तथ्यों पर ध्यान दिया:

- (1) डेनमार्क से संबंधित कैटेलिस्ट के आयातों से भारत में इस उत्पाद के उत्पादन और खपत के संदर्भ में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। इसके सीधे परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से क्षति हुई है।
- (2) डम्प कीमतों पर काफी मात्रा में डेनमार्क से आयातों ने घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमत को अलाभप्रद स्तर पर कम करने को मजबूर किया जिसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय बाजार में उन्हें कीमतें बहुत कम करनी पड़ीं। इन आयातों ने भारतीय बाजार में उत्पाद के मूल्यों को इस स्तर तक कम कर दिया कि घरेलू उद्योग को उत्पादन की अपनी पूरी कीमत प्राप्त करने तथा भारत में इसकी बिक्री से यथोचित मुनाफा कमाने से वंचित होना पड़ा।
43. इस प्रकार, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति डेनमार्क से डम्प आयातों के कारण हुई है।

ट. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

22. सामान्य रूप से प्रति-पाटन शुल्कों का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है तथा भारतीय बाजार में खुली और बिना भेदभाव की प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः बहाल करना है जो कि देश के सामान्य हित में है। यह माना गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से कैटेलिस्ट के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप निर्यात बाजार में उनके उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। विशेषकर तब, जबकि पाटनरोधी शुल्क की लेबी उस राशि तक ही सीमित कर दी जाए जोकि घरेलू उद्योग को हुए नुकसान को कम करने के लिए आवश्यकता है। इसके विपरीत डम्पिंग द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को समाप्त करने का उद्देश्य यह है कि भारतीय उद्योग के ह्रास को रोका जाए और इस प्रकार कैटेलिस्ट के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रहें। प्राधिकारी ने नोट किया कि पाटनरोधी उपायों से डेनमार्क से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे, इसलिए उपभोक्ताओं को होने वाली उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

23. घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक प्रतिपाटन शुल्क की मात्रा निर्धारित करने के लिए प्राधिकारी घरेलू उद्योग के लिए उत्पादन की लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के लिए भारत में सबजैक्ट कैटेलिस्ट के उचित बिक्री मूल्य का सहारा ले सकता है, जैसा कि लागत रिपोर्ट में प्रस्ताव किया गया है।

24. पंहुच कीमत: सबजैक्ट कैटोलिस्ट या तो सीमाशुल्क शीर्ष 38.15 अथवा 98.01 के तहत आयात किया जा सकता है। सीमाशुल्क शीर्ष जिसके तहत माल की निकासी की जा सकती है, उस उद्देश्य पर निर्भर करती है जिसके लिए कैटोलिस्ट आयात किए गए हैं। जिस मामले में आयात "परियोजना आयात" श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं इस मामले में इनकी निकासी शून्य सीमाशुल्क दर पर सीमाशुल्क शीर्ष 98.01 के तहत की जाती है। अन्यथा इनकी निकासी 38.01 के तहत की जा सकती है और उन पर प्रचलित दर से सीमाशुल्क लगता है। इसलिए, इन आयातों के लिए दो पंहुच कीमतों का परिकलन करना उचित होगा, एक प्रचलित सीमा शुल्क के साथ तथा एक शून्य सीमाशुल्क के साथ।

४ निष्कर्ष

25. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी ने पाया कि:

- क. एच. डी. एस. को छोड़कर, डेनमार्क मूल के अथवा वहां से निर्यातित सबजैक्ट कैटोलिस्टों का भारत को निर्यात उनके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया, जिसके परिणामस्वरूप डम्पिंग हुई है;
- ख. डेनमार्क से यू. एस. ए. मूल के एच. डी. एस. का सामान्य से कम मूल्य पर निर्यात किया गया, जिसके परिणामस्वरूप डम्पिंग हुई है;
- ग. यह क्षति डेनमार्क से हुए आयातों के कारण हुई है।

26. जब तक अन्तिम निर्णय नहीं हो जाता तब तक घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति को समाप्त करने के लिए डेनमार्क मूल के या वहां से निर्यात किए गए सबजैक्ट कैटोलिस्ट (एच. डी. एस. के अतिरिक्त) के सभी आयातों, पर अन्तिम जांच परिणाम आने तक अनन्तिम रूप से प्रतिपाटन शुल्क लगाना आवश्यक समझा जाता है। एच. डी. एस. के मामले में, जब डेनमार्क से इनका निर्यात किया जाता है, कैटोलिस्ट के सभी आयातों पर, अन्तिम जांच-परिणाम आने तक, अनन्तिम रूप से प्रतिपाटन शुल्क लगाना आवश्यक समझा जाता है।

इस पर विचार किया गया कि डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क लगाना हानियों को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा या नहीं। इस उद्देश्य से प्रत्येक कैटोलिस्ट के लिए आयातों को उतारने के बाद की भारत औसत कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की उस उचित बिक्री कीमत से की गई जिसका निर्धारण जांच अवधि के लिए किया गया है। जहां यह अन्तर डम्पिंग मार्जिन से कम था, वहां डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क की अनुशंसा की गई। तदनुसार, यह प्रस्ताव किया जाता है कि अन्तिम निर्धारण के लम्बित रहने तक डेनमार्क मूल के या वहां से निर्यात किए गए, सीमा शुल्क टैरिफ के अध्याय 38.15 तथा 98.01 के अन्तर्गत आने वाले कैटोलिस्ट्स के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की गई अधिसूचना की तिथि से वे अनन्तिम शुल्क लगाए जाएं जो कि नीचे विर्दिष्ट किए गए हैं :

(रु. प्रति लिटर)

क्रम सं.	कैटोलिस्ट का नाम	सीमाशुल्क अध्याय 38 के तहत आयातित	सीमाशुल्क अध्याय 98 के तहत आयात
क. डेनमार्क से निर्यातित उत्पाद			
1.	हाइड्रोडीसल्फराइजेशन कैटोलिस्ट (एच. डी. एस.)	36.11	123.17
ख. डेनमार्क मूल के अथवा वहां से निर्यातित उत्पाद			
1.	जिंक आक्साइड डीसल्फराइजेशन कैटोलिस्ट (जैड.एन. ओ. डी. एस.)	शून्य	21.24
2.	हाइ टैम्परेचर शिफ्ट कैटोलिस्ट (एच. टी. एस.)	30.99	92.99
3.	लो टैम्परेचर शिफ्ट कैटोलिस्ट (एल. टी. एस.)	शून्य	106.44
4.	सैकेंडरी रिफारमिंग कैटोलिस्ट (एस. आर.)	शून्य	192.01
5.	मेथानेशन कैटोलिस्ट (मेथ)	138.61	138.61

30. ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है, जो इस पत्र के जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशित होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है।

दीपक चटर्जी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

Ministry of Commerce
Government of India
NOTIFICATION

New Delhi, the May, 1997

Subject: Anti dumping investigation concerning imports of Hydro-desulphurisation Catalyst (HDS), Zinc Oxide Desulphurisation Catalyst (ZnODS), High Temperature Shift Catalyst (HTS), Low Temperature Shift Catalyst (LTS), Secondary Reforming Catalyst (SR), Methanation Catalyst (Meth) from Denmark -- Preliminary Findings

ADD/!W/39/95-96 - Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed with regard to the present investigation:
 - a. The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received written petitions from M/s. United Catalysts India Ltd. (UCIL) and Projects & Development India Ltd. (PDIL) alleging dumping of the following catalysts originating in or exported from Denmark;
 - i) Hydrodesulphurisation Catalyst (HDS);
 - ii) Zinc Oxide Desulphurisation Catalyst (ZnODS);
 - iii) High Temperature Shift Catalyst (HTS);
 - iv) Low Temperature Shift Catalyst (LTS);
 - v) Secondary Reforming Catalyst (SR);
 - vi) Methanation Catalyst (Meth).

The above catalysts have been referred to as subject catalysts in this notification.

- b. The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were pointed out to the petitioners;

- c. **The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioners, decided to initiate investigations against import of subject catalysts originating in or exported from Denmark. The Authority notified the Embassy of Denmark about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules;**
- d. The Authority issued a public notice dated 6.9.1996, published in the Gazette of India, extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject catalysts, classified under chapter 38 and 98 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Denmark;
- e. The Authority forwarded copy of the public notice to the known exporter (whose details were made available by the petitioners) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing, within forty days, in accordance with the rule 6(2);
- f. The Authority forwarded copies of the public notice to the known importers of the subject catalysts in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- g. Request was also made to the Central Board of Excise & Customs (CBEC) to arrange copies of all relevant Bills of Entries for the period of investigation. No information was, however, received from CBEC;
- h. The Authority provided copies of the petition to the known exporter and the Embassy of Denmark in accordance with rule 6(3) supra;
- i. The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information to M/s. Haldor Topsoe A.S., Denmark (hereinafter referred to as Haldor Topsoe or HTAS).

Haldor Topsoe, vide fax dated 4.10.1996 requested for extension of time by two months. The company, however, vide letter dated 24.10.1996 revised the request and sought time upto 8.11.1996, which was allowed by the Authority. The exporter filed response to the questionnaire within the extended time;

- j. The Embassy of Denmark in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of

the petition and questionnaire sent to the exporter was also sent to the Embassy;

- k. The questionnaire was sent to the following known importers of the subject catalysts in India calling for necessary information in accordance with rule 6(4).

- i) Krishak Bharati Cooperative Ltd., Surat;
- ii) National Fertilisers Ltd, Vijaipur;
- iii) Indo Gulf Fertilisers & Chemicals Corpn. Ltd.;
- iv) Indian Farmers Fertilisers Cooperative Ltd., ;
- v) Nagarjuna Fertilisers & Chemicals Ltd., Kakinada;
- vi) Steel Authority Of India Ltd., Rourkela;
- vii) Shreeram Fertilisers & Chemicals Ltd., Kota;
- viii) Madras Fertilisers Ltd., Madras;
- ix) Fertilisers & Chemicals Travancore Ltd., Udyogmandal;
- x) Tata Chemicals Ltd., Badaun;
- xi) Bindal Agro Chemicals Ltd., Shahjahanpur;

The following information was received:

- i) Steel Authority of India Ltd., Rourkela: No imports
- ii) National Fertilisers Ltd., Vijapur: It had imported HTS from HTAS, details of which are as follows:

Catalyst	P.O. Date	Date Invoice	Qty. (kgs)	Rate Rs./Kg.
HTS	*****	*****	*****	*****

- iii) Indian Farmers Fertiliser Co-operative Ltd., Bareilly: It has imported the following catalysts from Denmark for its A.E.P. plant:

Catalyst	P.O. Date	Date Invoice	Qty. (kgs)	Rate Rs./Kg.
ZnODS	*****	*****	*****	*****
ZnODS	*****	*****	*****	*****

- iv) Madras Fertilisers Ltd.: No imports.

- v) Tata Chemicals Ltd.: No imports.

- I. Information regarding injury to the Domestic Industry was sought from PDIL and UCIL;**
- m. Office and Works of UCIL at Cochin were visited by a team of officials deputed by the Authority with a view to conduct on-the-spot investigations;
- n. Cost investigation were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject catalysts in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioners so as to ascertain if anti dumping duty lower than the dumping margin would be enough to remove injury to the domestic industry;
- o. Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 1994 to 30th Sept., 1995;

B. PETITIONERS' VIEWS

- 2 The petitioners have raised the following major issues in their petitions and subsequent submissions:
 - (i) On Dumping:
 - a. Haldor Topsoe is dumping the subject catalysts with the sole aim of capturing Indian business so that the Indian industry makes losses and is not able to finance its R&D efforts;
 - b. Haldor Topsoe's strategy is to quote very low prices for "non-proprietary" catalysts and compensate the losses so incurred by selling their "proprietary" catalysts at high prices. In case of sales of these catalysts for replenishment charges, the exporter has quoted much lower prices. The exporter would, therefore, hold the country to ransom in the absence of competition;
 - c. All companies in Europe are selling at prices close to their list prices;
 - d. Haldor Topsoe export price to Middle East or South East Asia are at par or higher than European prices;
 - e. Cost of production of European manufacturers is much more than UCIL's cost of production;
 - f. Haldor Topsoe is exporting to India at half the European costs;

g. Haldor Topsoe is offering huge discounts of upto .42% on officially tendered prices;

h. Current export prices are lower than the prices prevailing ten years ago;

(ii) On injury:

Haldor Topsoe's dumping has lead to injury to the petitioners on account of the following:

a) The sales turnover has drastically declined;

b) The petitioners have been forced to reduce selling prices, resulting in financial losses;

c) Market share of the Indian industry has declined from 94% to 71%;

d) The petitioner's productivity has declined;

e) The petitioners may not be able to keep their R&D efforts, which is vital for the industry.

C. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

3. The views expressed by HTAS, importers and other interested parties, who have responded to the Authority, are as under:

Haldor Topsoe:

(i) On like articles:

a) HTS made by HTAS has different raw material than HTS made by the petitioners. The two are not like articles;

(ii) On dumping:

a) There was no dumping of catalysts into India;

b) HDS catalyst was not manufactured in Denmark. The same was procured by Haldor Topsoe from its affiliates in USA and exported to India. Since Denmark is not the country of origin, investigation in respect of HDS catalyst must be terminated;

c) In case normal value in accordance with Section 9A(1)c(i) is not available, the same may be derived in accordance with Section 9A(1)c(ii), which permits determination of normal value on either of the two options provided in the said Section. It is not necessary that these options should be exhausted in the sequence in which

they are given in the said Section. The exporter has, therefore, decided to make available normal value in accordance with Section 9A(1)(ii)(b). The exporter has argued that there is "an in-built arbitrariness" in determining normal value in accordance with Section 9A(1)(ii)(a) (comparable export price to other countries);

- d) The sale price of four catalysts have been higher than the cost of production including profit. The sale price in respect of the remaining two catalysts (ZnODS and LTS) did not fully cover the costs for special reasons;
- e) HTAS's products are superior - in India or world over;
- f) HTAS did not get orders at the high prices indicated by the petitioners;
- g) There is nothing like EEC cost of production or EEC list price. Cost of production varies from producer to producer. Anti Dumping Duty is exporter specific and not country specific;
- h) HTAS did not get any order at the South East Asian or Middle East prices referred in the petitions;
- (iii) On injury:
 - a) The petitioners have blacked out much of the information relating to injury making comments difficult. Non-disclosure of such information will be in violation of the principles of natural justice;
 - b) Demand of the catalysts fluctuate from year to year in view of the life of the catalysts. Sales, capacity utilisation, stock position etc. are bound to vary from year to year. Consequently these factors are not indicators of injury per se and the causal link can not be established;
 - c) The catalyst wise comments on injury are as follows:
 - i) HDS: The capacity utilisation increased from 4.1% (1992-93) to 9.9% (1994-95). Employment also increased from 3 to 13. Sales have almost tripled and there was no closing stock;
 - ii) ZnODS: Capacity utilisation increased marginally in 1994-95 as compared to 1992-93. Stock had reduced significantly and sales had shown improvement;
 - iii) SR: There was no import of this catalyst during 1994-95 and therefore, the fall in the capacity utilisation cannot be attributed to dumping;

iv) HTS: The decline in capacity utilisation in 1993-94 as compared to previous year cannot be attributed to dumping as there was no import of this catalyst in 1993-94. There are other reasons for fluctuating capacity utilisation of this catalyst;

v) LTS: The decline in capacity utilisation in 1993-94 as compared to previous year is attributable to export sales. The sales in 1994-95 were low in-view of high opening stocks;

- d) Section 9A provides for levy of "an Anti Dumping Duty". There cannot be two different injury margins and rates of Anti Dumping Duties.
- e) The petitioners' prayer is in respect of the subject catalysts under Heading 38.15. Project imports at nil rate of duty have been allowed by the Central Govt. in public interest;
- f) It is an established law that levy under the Act is the rule and exemption is an exception. It is not logical to take the exempted rate as the basis for injury margin;
- g) Landed value of imports inclusive of customs duties will not result in any injury margin. No Anti Dumping Duty is therefore leviable;
- h) HTAS is the only company which provides technical know-how alongwith the material. This is the reason for preference to HTAS by the importers. The importers requested HTAS to match the prices, on negotiations, though the company generally ensured that the supplies were not below cost of production and mark-up;
- i) The exporter was forced to reduce the prices and offer substantial discounts at the instance of the importers. This cannot be termed as dumping;
- j) PDIL has become a sick company, cost of which is not attributable to the imports from Denmark;

D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED

- 4. The submissions made by the exporter, importers, petitioners and other interested parties have been examined and considered while preparing this report and have been dealt at appropriate places in this notification.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

5. The products under consideration in the present investigation are of the following description.

- i) Hydrodesulphurisation Catalyst (HDS);
- ii) Zinc Oxide Desulphurisation Catalyst (ZnODS);
- iii) High Temperature Shift Catalyst (HTS);
- iv) Low Temperature Shift Catalyst (LTS);
- v) Secondary Reforming Catalyst (SR);
- vi) Methanation Catalyst (Meth).

These catalysts have been referred to as subject catalysts in these findings.

The details of the subject catalysts are as follows:

- a. HDS: Cobalt-Molybdenum/Nickel-Molybdenum based catalyst on High Surface Alumina carrier in the form of regular extrusion and high geometric surface extrusion.
 - b. ZnODS: Zinc Oxide based catalyst having specific physical and textural properties, blended with suitable binders in the form of pellets.
 - c. SR: Nickel based catalyst on alpha alumina carrier or calcium aluminate compound in the form of rings/high geometric surface rings.
 - d. HTS: This is an iron chrome and copper promoted iron chrome based catalyst.
 - e. LTS: This is a copper-zinc on alumina based catalyst in the form of tablets.
 - f. METH: This is a nickel-alumina based catalyst in the form of tablets and/or sphere.
6. A catalyst is an inorganic substance which hastens or retards a chemical reaction without necessarily undergoing a chemical change itself during the process. Catalyst is used to facilitate a specific reaction. Different types of catalysts may be required to enhance or retard the efficiency of operation. The type of catalyst required largely depends on the chemical reaction taking place. Catalysts are specifically designed for a particular reaction. Each catalyst has different bulk density, physical and chemical properties.

7. The subject catalyst are solids in the form of tablets, rings, spheres or extrusions. Production of catalysts is normally accounted for in weight but the same are usually sold in volumes.
8. The subject catalysts are classified under chapter 38 and also under 98 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975. The classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

The catalysts imported under chapter 98 were subject to nil rate of customs duties during the period of investigation.

F. LIKE ARTICLES

9. In so far as the subject catalysts other than HTS are concerned, there is no dispute that the catalysts produced and sold by the petitioners were alike in all properties to the catalysts imported from Denmark. As regards HTS, the exporter has argued that the HTS produced by HTAS is made of iron oxide with stabilisation by chromium. The exporter has further argued that all the catalysts manufacturers are using the chromium stabilised iron oxide as HTS, while HTAS has developed copper promoted chromium stabilised iron oxide catalyst as HTS. According to HTAS, this is a new product, not manufactured by the petitioners during the investigation period and not a like article to the HTS produced by the domestic industry.
10. It is observed that the HTAS has merely claimed that the HTS produced by them is made from raw-material which is different from the raw-material used by all other producers. It is not the argument of the exporter that the product under consideration, namely, HTS is not commercially and/or technically substitutable to the catalyst produced by the domestic industry. Rule 2(d) of the Rules supra covers in its scope not only those goods which are identical in all respects to the alleged dumped products but even those closely resembling characteristics. The Authority, therefore, holds that the HTS produced by the domestic industry is a like article to the HTS exported by HTAS in terms of rule 2(d).

G. DOMESTIC INDUSTRY

11. M/s United Catalyst India Ltd., 402/403 Mansarovar, 90, Nehru Place, New Delhi 110 019 and Projects & Development India Ltd., A 14, Sector 1, Noida 201 301 have filed separate petitions. UCIL filed petition for all the subject catalysts, whereas PDIL petition is for all subject catalysts except HDS, as the company does not produce this catalyst. M/s. ICI India Ltd., Panki, Kanpur-208001 is

also a producer of catalysts in India. However, it has not produced these subject catalysts since 1992-93. Production of the petitioners accounted for the majority production of the subject catalysts in India during the investigation period. The petition is, therefore, considered as having being made by the domestic industry and the petitioners constitute domestic industry in accordance with Rule 2(b) supra.

H. NORMAL VALUE

12. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either—
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

13. (i) HTAS has argued that in case normal value in accordance with Section 9A(1)c(i) is not available, then the same may be derived in accordance with Section 9A(1)c(ii), which permits determination of normal value on either of the two options provided in the said Section. It is not necessary that these options should be

exhausted in the sequence in which they are given in the said Section. The exporter has, therefore, decided to make available normal value in accordance with Section 9A(1)c(ii)(b). The exporter has argued that there is "an in-built arbitrariness" in determining normal value in accordance with Section 9A(1)c(ii)(a) (comparable export price to other countries).

(ii) It has further been argued that the sale price of four catalysts have been higher than the cost of production including profit. The sale price in respect of the remaining two catalysts (ZnODS and LTS) did not fully cover the costs for special reasons.

(iii) The Authority finds that under Section 9A(1)c(i) normal value in relation to an article means the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory. Clause (ii) prescribes for two methods of calculation of normal value under sub-clauses (a) and (b). However, the important point to note is that clause (ii) can be resorted to only and only if there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory. In the instant case, HTAS has not denied the fact that they have made sales to other countries in Europe which are a part of the European Union. The European Union is a customs union where there are no customs barriers or duties and where common rates of duty are applied to imports from non-member countries. Even anti dumping and countervailing measures are adopted for the entire territory of EU as a whole irrespective of the fact that exports may have been made only to some of the constituents of the EU. The EU can, therefore, be considered as a territory as envisaged under Section 9A(1)c(i). The representatives of the exporter were also asked to provide information with regard to their export prices to other countries, but no information was received either from the exporter or its representatives in India. The Authority has, therefore, considered that HTAS has failed to provide information with regard to normal value prevailing in the territory of EU, even though the same exists, to enable the Authority to arrive at a fair normal value in accordance with the legal provisions.

(iv) As regards the claims made by the exporter that they have an option to give information either under sub-clause (ii)(a) or sub-clause (ii)(b), the Authority observes that the applicability of clause (ii) itself is not invoked as comparable prices in the ordinary course of trade in the exporting territory exist but the exporter has not co-operated with the Authority in providing with that information. Notwithstanding the fact that clause (ii) is not applicable in view of the discussions above, the contention of the exporter that they have an option to choose between sub-clause (ii)(a) or (ii)(b) is not

tenable, in as much as the exporter is obliged to give information as asked by the Authority under rule 6(4). It is for the Authority to determine the normal value under sub-clause (a) or (b) after considering all the facts, as asked for, in terms of the rules in this regard.

(v) In view of the above, the Authority has discarded the costing information provided by the exporter as recourse to this method for arriving at the normal value is not supported by law. The Authority has, therefore, determined the normal value in terms of the best information available to it.

(vi) The petitioners have submitted copies of some of the orders received by other suppliers within the European Community. The Authority observes that the list price and the prices prevailing within the European territory, as indicated in the evidence given by the petitioners, are in the same band. It may, therefore, be appropriate to take the list prices for the purpose of arriving at the normal values for all subject catalysts except HDS which has been separately dealt with in the following paragraph.

14. (i) In the case of HDS, the exporter has claimed that the said catalyst was not manufactured by them in Denmark but was procured from their affiliates in USA and exported to India. The normal value for this catalyst, therefore, is required to be worked out in terms of proviso to Section 9A(1)c. Accordingly, the Authority, vide its letter dated 12.12.96 requested the exporter through its representative to furnish the normal value of HDS in USA. The exporter vide their letter dated 3.1.97 reiterated its contention made in their initial response to the questionnaire. The exporter further requested that since they have not produced the goods in Denmark, investigation should be terminated with regard to this particular catalyst. The Authority observes that the exporter refrained from providing normal value as prevailing in USA despite being requested to do so by the Authority vide its letter dated 12.12.96. The rules with regard to determination of normal value very clearly provide, as stated above, the method to be followed in case of goods being exported from a country or territory other than the country of origin. Once the normal value is worked out under the rules, the existence and degree of dumping is to be seen in the context of the normal value so determined. There is no basis or reason for termination of investigation on this ground. In view of the above, the Authority has considered determination of normal value as prices prevailing in USA, on the basis of best information available to it.

(ii) The petitioners have submitted list price of all catalysts including the price of HDS as prevailing in the USA during the

period of investigation. Since there is reasonable evidence to suggest that the list prices are indicative of the actual prices prevailing, and in view of the fact that there is no evidence to the contrary, the Authority adopted the list prices as prevailing in USA for determination of normal value for HDS.

I. EXPORT PRICE

15. The petitioners furnished, in their petitions, details of export price on the basis of transactions entered by HTAS. The same were relied upon for initiation. HTAS has furnished details of all the subject catalysts exported by it during the investigation period. On scrutiny, it was found that the export transactions reported by the petitioners did not tally with the transactions reported by HTAS. The exporter was therefore, requested to furnish details of all the transactions entered into during the investigation period. The exporter, however, furnished only the details of all the transactions effected by it during the investigation period. Since the exporter has not furnished complete information required by the Authority, the export price has been worked out on the basis of the information furnished both by the petitioners and HTAS.

J. COMPARISON

16. The rules relating to comparison provides as follows:

"While arriving at margin of dumping, the designated authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability."

17. The Authority has observed that the majority of catalysts are sold through tenders. There is a considerable time lag between the price contract and the date of actual delivery. The rules provides that comparison is required to be made in respect of the "sales" and not imports. The rules further provide that due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability. The Authority observes that it is the price contract which leads to price undercutting or underselling causing injury to the domestic industry. The fact that the deliveries may be made outside the investigation period is of no direct consequence. In view of the same, comparisons have been made between the

normal value and the export prices contracted during the investigation period without reference to the period of actual import/deliveries.

18. The comparison shows the following dumping margins:

S N	Name of the Catalyst	Normal value	Export price		Dumping margin *	
			When Imported Under 38	98	When Imported Under 38	98
1.	Hydrodesulphurisation (HDS)	*****	*****	*****	32.61	85.19
2.	Zinc Oxide Desulphurisation (ZnODS)	*****	*****	*****	76.06	90.36
3.	High Temp. Shift (HTS)	*****	*****	*****	135.58	153.97
4.	Low Temp. Shift (LTS)	*****	*****	*****	100	113.90
5.	Secondary Reforming (SR)	*****	*****	*****	nil	152.71
6.	Methanation (Meth.)	*****	*****	*****	134.74	134.74

* as percentage of export price.

K. INJURY

19. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
20. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority may consider such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales

realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra

21. (i) The effect of the dumped imports shall be assessed, in accordance with para (vi) of the Annexure II to the Rules, in relation to the domestic production of the like article when available data permit separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effect of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which the necessary information can be provided.

(ii) In the instant case it is observed that the demand for the subject catalysts fluctuates significantly over a period of time. One of the factors contributing to this peculiar demand pattern is the long life of the catalysts. It is also observed that though the different types of catalysts have different characteristics, usage etc., there are a number of processes which use common equipment and facilities. In view of the fact that the production processes as well as the production capacities overlap each other in varying proportions, it would not be appropriate nor feasible to assess the injury to the domestic industry for each individual type of catalyst. The Authority, therefore, in accordance with the para 6 of Annexure II to the Rules, considers it appropriate to assess the injury for all the six types of catalysts cumulatively.

a. Volume and Market Share of Dumped Imports:

The petitioners have reported that HTAS has been the sole exporter of the subject catalysts to India since 1992. The Authority observes that the Indian industry had a market share of 93.9% (1988) which declined to 74% in 1992 and 68% in the investigation period.

b. Factors affecting domestic industry:

i) Production and Capacity Utilisation:

Overall capacity utilisation of UCIL declined by 28% between 1992-93 and 1994-95. The petitioner reported that the fall in the capacity utilisation is in spite of increasing market of catalysts in India. The other Indian producer, M/s. ICI has not produced any of the subject catalyst since 1992-93, in spite of increasing demand of the catalysts in India.

ii) Sales in Absolute Quantity:

Overall sales of UCIL in the domestic market declined by 33 percent in 1994-95 as compared to 1992-93. UCIL has reported major loss of sales to the exporter from Denmark. The petitioner

has lost business because of non-availability of orders for the subject catalysts. PDIL has reported non-availability of orders for PR catalyst because of exports by HTAS.

iii) Selling Prices Trend

The petitioners had to reduce the prices in order to get orders in view of lower prices offered by HTAS. UCIL has been forced to quote prices significantly lower than its list prices. It is observed that the prices quoted by UCIL in 1995-96 are significantly lower than the prices at which the company got orders in the past three years and 1983. In case of PDIL also, the selling prices of the subject catalysts (except ZnODS) in 1994-95 were significantly lower than prices in 1992-93.

The Authority observes that the lower prices quoted by HTAS would directly affect the prices which the domestic industry might offer in future. In an industry like the present, where marketing is on the basis of tendering, even a lower offer made by a participant may force the others in the industry to quote lower prices.

iv) Profit/Loss:

Sales at significantly lower prices coupled with the lower sales volumes resulted in substantial financial losses to UCIL in 1994-95 whereas the company was earning profits. In case of PDIL, the losses have increased in 1994-95 as compared to the previous year.

v) Employment and productivity:

UCIL has reported substantial reduction in productivity from 5.02 MT per person per year in 1992-93 to 2.68 MT per person per year in 1994-95. UCIL has alleged that the loss of profits shall adversely affect its R&D efforts. It is appreciated that no business organisation can afford to invest in R&D activities in case its operations are not profitable. R&D activities are vital for the very survival of an industry like catalyst. PDIL has reported loss of productivity by around 32% as compared to 1992-93 in view of lower sales.

22. The Authority thus observes that the domestic industry has suffered material injury from imports originating in or exported from Denmark. It is also evident that the dumping, if continued, would have serious depressing and/or suppressing effect on prices of these catalysts in the market.

L CAUSAL LINK

23. In determining whether material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:

(i) The imports of subject catalysts from Denmark increased significantly relative to the production and consumption in India. Consequently, the domestic industry lost its market to a significant level.

(ii) The substantial imports at dumped prices forced the domestic industry to reduce its selling prices to unremunerative level which resulted in a situation of price underselling in the Indian market. Imports from Denmark led to reduction of prices in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit.

The Authority thus arrived at a conclusion that the material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports from Denmark.

M. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

24. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.
25. It is recognised that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject catalysts and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is limited to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject catalysts. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from Denmark in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

26. To ascertain the extent of Anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority has relied upon reasonable selling price of the subject catalysts in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production for the domestic industry.

N. Landed Value:

27. The subject catalysts may be imported either under chapter 38 or 98. The custom heading under which the goods may be cleared depends upon the purpose for which the catalysts are imported. In case the imports are under "project import" category, the same are cleared under chapter 98 at nil rate of customs duty. The same are otherwise cleared under chapter 38 and attract prevailing customs duties. It would be, therefore, appropriate to work out two landed values for the imports, one with the prevailing customs duties and one with nil customs duty.

O. CONCLUSIONS

28. The Authority thus, after considering the foregoing, finds that:
- a. Subject catalysts, except HDS originating in or exported from Denmark have been exported to India below their normal value, resulting in dumping;

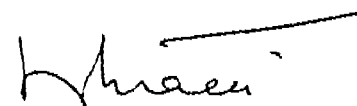
HDS, originating in USA has been exported from Denmark below its normal value, resulting in dumping;
 - b. Imports from Denmark have caused material injury to the domestic industry.
 - c. The injury has been caused by the imports from Denmark.
29. (i) It is considered necessary to impose anti dumping duties provisionally, pending final determination, on imports of the subject catalysts (except HDS) originating in or exported from Denmark in order to remove material injury to the domestic industry, pending investigation. In case of HDS it is considered necessary to impose Anti Dumping Duty, provisionally, pending final determination, on imports of the catalyst when exported from Denmark.
- (ii) It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. The weighted average landed price of the imports, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, for individual catalyst, determined for the period of investigation. Wherever the

difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, It is proposed that provisional anti dumping duties, as set out below, be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on imports of Catalysts, falling under Chapters 38 & 98 of the Customs Tariff, originating in or exported from Denmark, pending final determination.

(Rs. per Ltr)

S No	Name of the Catalyst	Imported Under Chapter 38	Imported Under Chapter 98
A. Products exported from Denmark			
1.	Hydrodesulpherisation Catalyst (HDS)	36.11	123.17
B. Products originating in or exported from Denmark			
1.	Zinc Oxide Desulpherisation Catalyst (ZnODS)	nil	21.24
2.	High Temperature Shift Catalyst (HTS);	30.99	92.99
3.	Low Temperature Shift Catalyst (LTS);	nil	106.44
4.	Secondary Reforming Catalyst (SR);	nil	192.01
5.	Methanation Catalyst (Meth)	138.61	138.61

30. The known exporters, importers, petitioners and other interested parties are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the despatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.



(Dipak Chatterjee)
Designated Authority

1130-21/97

